1927
693
P
M
Microfilm

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1358/1071

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 693

S/2011

401
29

* वन्दे मातरम् *

राष्ट्रीय उमंग

संग्रह कर्ता

उमाचरन लाल गोरखपुर

मुद्रक व प्रकाशकः—

कसौंधन पुस्तकालय

गोरखपुर

(सर्वाधिकार स्वरक्षित)

गोरखपुर प्रिन्टिङ्ग प्रेस ।

प्रथमवार १००० } १९३१ { मूल्य -)

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 693
Date 17.12.71
GOVT. OF INDIA
891.431
L45K

राष्ट्रीय उमंग

जगा दिया

किसकी बुलन्द आवाज़ ने,
भारत को आ जगा दिया।
सोया पड़ा था बे ख़बर,
किसने इसे उठा दिया॥
गुलामी में मेरे थे कसे,
चंगुल में मेरे थे फँसे।
रस्ता इन्हें आज़ादी का,
गाँधी ने अब बता दिया॥
क्या चैन से गुजरती थी,
ह्विस्की शराब ढलती थी।
फ़ाक़े कशी के दर्जे तक,
अब हमको बस पहुँचा दिया॥

विलायती कपड़ा त्याग कर,
खद्दर का कर प्रचार सब।
लंका शायर को एक दम,
मिलकर के बस रुला दिया॥
करके जबर भी हारे हम,
आन्दोलन न होता कुछ भी कम।
चिढ़ के दमन से और भी,
लन्दन को बस हिला दिया॥
इसने तो मेरे एक दम,
नाकों में दम पहुँचा दिया।

गज़ल।

आये हो जो मैदान में कुछ करके दिखा दो।
अपने मुख़ालिफों को तो कुछ लुत्फ़ चखा दो॥
नामो निशाँ बाकी न रहे जुल्मों सितम का।

"दास और भगत" दत्त के जीवन को जगा दो ॥
किस रोज आये काम ज़रो माल जिन्दगी।
हो जाओ अमर नाम शहीदों में लिखा दो ॥
आज़ाद बने हिन्द गुलामी से रिहा हो।
ऊँचा रहे सर क़ौम का दुनियाँ को दिखा दो ॥
बौछार हो गोलों की मशीनों की जहाँ पर।
क़ातिल की हो तलवार तो सीने को अड़ा दो ॥
हाजत नहीं हथियार की ऐ नौ जवाँ किशोर।
आहों से जलादो चलो दुश्मन को मिटा दो ॥

ग़ज़ल।

यह गाँधी टोपी क्या हुई पिस्तौल हो गई।
लख कर इसे सरकार डाँवा डोल हो गई ॥
हम तो कभी डरते नही तलवार तोप से।
बेड़ी भी पहन कहते हैं रमझोल हो गई ॥
पर पेट में क्यों दर्द है इस गाँधी कैप से।
है जादू या सरकार ही बगलोल हो गई ॥

क्या जुर्म इसका पहिनना स्वतंत्र हो गया ।
कानून भी है या कोई माखौल हो गई ॥

देशगान ।

अनोखा निराला हमारा वतन है ।
हमें जानो दिल से प्यारा वतन है ॥
मुसीबत भी आफ़त भी जुल्मों सितम भी ।
तेरे वास्ते सब गवारा वतन है ॥
हमें हो तमन्नायें जन्नत की क्यों कर ।
कि जन्नत से बढ़ कर हमारा वतन है ॥
निगाहों में रहता है मंज़र वतन का ।
सफ़र में भी हमराह प्यारा वतन है ॥
करो पहिले आज़ाद अपने वतन को ।
गुलामी से जकड़ा हमारा वतन है ॥
न आलम से मतलब न दुनियाँ से मतलब ।
हमारे लिये बस हमारा वतन है ॥

——:❀❀❀❀:——

* ग़ज़ल *

जाने क्या जादू डाल दिया,
इन खद्दर कुरते वालों ने ।
सबका मन मोह लिया छन में,
इन खद्दर कुरते वालों ने ॥
सब जगह हिन्द में शोर किये,
भारत माता गांधी की जय ।
अरु झंडा तिरंगा उड़ा दिया,
इन खद्दर कुरते वालों ने ॥
खद्दर की साज सजा डाला,
दर्शक को आज हिलाडाला ।
कर लिया विजय डंका बजवा,
इन खद्दर कुरते वालों ने ॥
कितने मिल टूट गये जड़से,
कितने निज दशा विचारत हैं ।
है गाज गिराया कितनो पर,
इन खद्दर कुरते वालों ने ॥

गाँधी मोती जपते जाओ,
जिनने यह मार्ग दिखाया है ।
पढ़वाया पाठ अहिंसा का,
इन खद्दर कुरते वालों ने ॥
खद्दर से प्रेम करो निस दिन,
खद्दर स्वराज्य दिलवाएगा ।
यह विनती अन्त सुनाते हैं,
इन खद्दर कुरते वालों ने ॥

अँधेरा हो गया ।

आज भारत में यकायक ही अँधेरा हो गया ।
रोशने हिन्दोस्तां गायब सितारा हो गया ॥
गौहर जो सच्चा सीप का लाला वो मोतीलाल था ।
एकदम चक्कर क़ज़ा का ही कज़ारा हो गया ॥
इस वतन की आबरू को था बढ़ाया शेर ने ।
मुसीबत लाखों सहीं ग़म का पिटारा हो गया ॥
एक तो मोहम्मदअली का शोक हम भूले नहीं ।

हा ग़ज़ब कहरे ख़ुदा ये क्या दुबारा हो गया ॥
तुख़्म आज़ादी का बोया था तिलक महराज ने।
सरसब्ज़ मोतीलाल कर दुनियाँसे न्यारा होगया ॥
देश आज़ादी के लिये सब निछावर कर गया।
गाँधी जी का था सहारा बेसहारा हो गया ॥
देशकी ख़िदमतको उसने जां को क़ुरबाँ कर दिया।
हिन्द में मातम का जारी आह नारा हो गया ॥
जन्नत में परियाँ रो रहीं हूरो मलायक देव भी।
इन्द्र ने मातम किया गुलगुल हजारा हो गया ॥
थर्रा गया वो आस्मां और ज़मीनों माहे फ़लक।
बादल भी रोया इस क़दर अश्कों का धारा होगया ॥
गाँधी की दाईं भुजा अब एक दम ग़ायब हुई।
फिर से दुबारा जन्म लें आशिष हमारा हो गया ॥

चर्खावाला।

स्वराज का डंका भारत में,
बजवा दिया चर्खा वालों ने।

हर जगह तिरंगे झंडे को,
फ़हरा दिया चर्खावालों ने ॥
दुख देख हिन्द माता जी का,
फ़ौरन समर-भूमि में कूद पड़े ।
फिर नव उमंग से नई लहर,
लहरा दिया चर्खावालों ने ॥
दे युद्ध निमंत्रण एक साल का,
इस दम नौकरशाही को ।
है सुख स्वराज्य का एक झलक,
दरशा दिया चर्खावालों ने ॥
जो वस्त्र विदेशी बेंच बेंच,
दुश्मन का जोर बढ़ाते थे ।
उन में प्रचार खादी का कर,
घबरा दिया चर्खावालों ने ॥
उड़ गये होश दल्लालों के,
जो बैठे मौज उड़ाते थे ।
बस सावधान कर दिल उनका,

दहला दिया चर्खावालों ने ॥
खलबली मची है जोर शोर की,
कारखानों में लन्दन के ।
कर वस्त्र विदेशी की होली,
थर्रा दिया चर्खावालों ने ॥
हो गये बन्द पचासों मिल,
मजदूर बहुत बेकार हुये ।
वाँ धमक सुदर्शन चर्खे का,
पहुँचा दिया चर्खावालों ने ॥
जो पड़े हुये निश दिन मद में,
थे तोप तीर तलवारों के ।
रूबरू शस्त्र सत्याग्रह का,
चमका दिया चर्खावालों ने ॥
इस धर्म युद्ध का साफ़ चित्र,
क्या बारदोली ने दिखलाया ।
नौकरशाही को अन्त समय,
झुकवा दिया चर्खावालों ने ॥

आदर्श अहिंसा का इस दम,
संसार के सन्मुख रक्खा है ।
एक बार प्रेम की गंगा को,
बहवा दिया चर्खावालों ने ॥
हम मानव हो क्यों सात कोटि से,
घृणायुक्त व्यवहार करें ।
इस छुआ छूत की उलझन को,
सुलझा दिया चर्खावालों ने ॥
हम देश जाति निज धर्म भूल
घनघोर नींद में सोये थे ।
अब जगा जगा कर मूल मंत्र,
बतला दिया चर्खावालों ने ॥
कर दिया बराबर राव रंक को,
राष्ट्र-धर्म सिखला करके ।
सब ऊँच-नीच का भेद भाव,
मिटवा दिया चर्खावालों ने ॥

गर अभी आप नहिं आ जाते,
यह देश रसातल ही जाता ।
ले नाव किनारे मैया की,
पहुँचा दिया चर्खावालों ने ॥
है जेल खेल इस भारत में,
फांसी भी एक तमाशा है ।
हँस हँस कर बलि हो जाने को,
सिखला दिया चर्खावालों ने ॥
हो चाह अगर तो आजादी की
तो वीर "बहादुर" बन जावो ।
इस अन्धकार में नया मार्ग,
दिखला दिया चर्खावालों ने ॥

कृष्णाअवतार अब गांधी अवतार है ।

उठी लेखनी आज फिर लेकर यह अभिमान ।
मोहन मोहनदास का करना है गुण गान ॥

इसी देश को भेंटने आये दोनों त्रास।
वे केवल मोहन रहे ये हैं मोहनदास॥

श्री मोहनकृष्ण अब मोहनदास,
गाँधी का रूप धरि आये हैं।
वे चक्र सुदर्शन धारी थे,
तो ये भी चर्खाधारी हैं॥
वे मुरली मधुर बजाते थे,
ये चर्खा खूब चलाते हैं।
वे दूध गाय का पीते थे,
तो ये बकरी का पीते हैं॥
वे विख्यात बृजबिहारी थे,
तो ये गुजरात बिहारी हैं।
तब थे सब साथी ग्वालबाल,
अब वालेंटियर बनाये हैं॥
तब थीं सब पागल बृजबाला,
अब हैं देवी झंडा लेकर।

उनकी भी भक्तिनि मीरा थी,
इनकी भी भक्तिन मीरा हैं ॥
वे सूत्र महाभारत के थे,
ये नेता सत्याग्रह के हैं ।
तब बने सारथी अर्जुन के,
अब वीर जवाहिर पाये हैं ॥
उन मोहन का बरसाना था,
इन मोहन का धरसाना है ।
वे माखन चोर कहाते थे,
ये नमक चोर कहलाये हैं ॥
उन पूतना को मारा था,
तो इन अब सुरा बिदारा है ।
वे साग बिदुर घर खाये थे,
ये अछूत हृदय लगाये हैं ॥
वे राजनीति के पंडित थे,
ये राजनीति के ज्ञाता हैं ।
वे मोह छुड़ाये अर्जुन का,

तो इनसे माडरेट जागे ॥
वे मथुरा से द्वारिका गये,
ये अफ्रीका रह आये हैं।
गोवर्द्धन उधर उठाये थे
भारत इन आय जगाये हैं ॥
वे प्रगटे काराग्रह में थे,
ये जेल को गेह बनाये हैं।
वंशी उनकी मन हरती थी
वाणी इनकी आकर्षक है ॥
वे ओढ़े काली कमली थे,
ये खद्दर में दिखलाये हैं।
मोहनी सूरत थी उनकी तो,
ये हरदम मुसकाये हैं ॥
तब भी भक्त जमाना था,
और अब भी भक्त जमाना है।
तब भी भारत निर्भय था,
और अब भी भारत निर्भय है ॥

हस्तिनापुर में दुर्योधन से,
मिलकर सन्धि चरचा की।
तो इन्होंने भी दिल्ली में,
जा इरविन को समझाये हैं॥
उन्होंने गीता ज्ञान दिया,
ये गीता को अपनाये हैं।
तब संग्राम था असुरों से,
अब शासन से उलझाये हैं॥
बतलाओ तो क्या सच मोहन,
ये दुःख छुड़ाने आये हैं।
इस कारण "राधेश्याम" कहो,
सब मिलकर मोहनदास की जय॥

❀ इति ❀

गोरखपुर प्रिन्टिङ्ग प्रेस में छपा।